आप परमेश्वर को कैसे देखते हैं?

आप परमेश्वर को जैसा देखते हैं, वैसा ही आपका विश्वास, आपकी आराधना और आपका दैनिक जीवन बनता है। कुछ लोग उसे दूर, कठोर और केवल आज्ञा देनेवाला मानते हैं। कुछ उसे केवल कोमल देखते हैं, पर कभी पवित्र नहीं। परन्तु पवित्र शास्त्र हमें परमेश्वर का एक बहुत गहरा और संतुलित स्वरूप दिखाता है। परमेश्वर स्वयं को हमारे सामने सबसे निकट के मानवीय संबंधों में प्रकट करता है—मित्र, पिता, दूल्हा और सहायक के रूप में। फिर भी वह वह भस्म करनेवाली अग्नि है, जिसके सामने पूरी सृष्टि काँपती है।

उसे सही रूप में देखना मतलब है उसकी निकटता और उसकी महिमा, दोनों को स्वीकार करना। उसके प्रेम और उसकी भय-भक्ति को जानना। उसकी मित्रता और उसकी पवित्रता का आनन्द लेना। यह विरोध नहीं, बल्कि यही परमेश्वर की पूर्णता है।

उन्हें सही दृष्टि से देखना यह स्वीकार करना है कि उनकी निकटता और उनकी महिमा दोनों सत्य हैं। उनका प्रेम और उनका भय दोनों जानना है। उनकी मित्रता और उनकी पवित्रता का आनंद लेना है। यह विरोधाभासी नहीं — यह परमेश्वर की पूर्णता है।

यीशु: वह मित्र जो आपको पास बुलाता है

हम मित्रता के बारे में सोचते हैं ऐसे किसी को जो हमारे साथ जीवन बाँटता है, सुनता है, और हमारे साथ चलता है। यीशु इस मित्रता को सबसे उच्च स्तर पर ले जाते हैं। उन्होंने अपने मित्रों के लिए अपना प्राण न्योछावर किया। उन्होंने न केवल हमें बचाया, बल्कि हमें अपनी आत्मीयता में बुलाया।

“इस से बड़ा प्रेम और कोई नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे। यदि तुम जो मैं आज्ञा दूँ, उस पर चलोगे, तो तुम मेरे मित्र हो। अब से मैं तुम्हें दास नहीं कहूँगा, क्योंकि दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या कर रहा है; परन्तु मैंने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैंने जो

कुछ अपने पिता से सुना, वह सब मैंने तुम्हें बता दिया है।"

— (यूहन्ना 15:13–15, Pavitra रूप / समान अर्थ)

कल्पना कीजिए, परमेश्वर का पुत्र कह रहा है, "मैं तुम्हें मित्र कहता हूँ।" यह केवल एक सामान्य मित्रता नहीं — यह एक वाचा-आधारित मित्रता है। यीशु हमें स्वर्ग के रहस्य बताते हैं, खुलकर बोलते हैं, और हमारी असफलताओं में भी हमारे साथ चलते हैं।

परमेश्वर पिता: दत्तक ग्रहण और अपनापन

मित्रता से आगे, परमेश्वर हमें अपनी संतान कहते हैं। बाइबल कहती है कि हम न केवल काफ़ी क्षमाप्राप्त हैं, बल्कि दत्तक भी लिए गए हैं। हम उसके घराने से हैं।

"देखो, पिता ने हम पर कैसा महान प्रेम प्रकट किया कि हम परमेश्वर की संतान कहलाएँ! और हम आशा करते हैं कि हम हैं। इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे नहीं जाना।"

— (1 यूहन्ना 3:1, Pavitra रूप)

"क्योंकि तुमने फिर से भय की आत्मा नहीं पाई, परन्तु तुमने पुत्रत्व की आत्मा पाई है, जिससे हम पुकारते हैं, 'अब्बा! पिता!'"

— (रोमी 8:15, Pavitra रूप)

"अब्बा" वह आत्मीय शब्द था जो प्रथम शताब्दी का बच्चा अपने पापा को कहता था। परमेश्वर कोई कठोर स्वामी नहीं है — वह प्रेम करनेवाले पिता हैं जो हमारी रक्षा करते हैं और अपनी सन्तानों में आनन्द लेते हैं। जब तुम प्रार्थना करते हो, तो यह किसी अनिच्छुक देवता को मनाने की कोशिश नहीं है, बल्कि एक ऐसे पिता के पास जाना है जो पहले से ही तुमसे प्रेम करता है।

परमेश्वर दूल्हे के रूप में: वाचा प्रेम और एकता

बाइबल भाषा को और आगे ले जाती है। न सिर्फ मित्र, न सिर्फ पिता — बल्कि दूल्हा। परमेश्वर हमारी आत्मा के प्रेमी हैं।

"तुम्हारा निर्माता तेरा पति है; सेनाओं का प्रभु उसका नाम है; इस्राएल का पवित्र तेरा उद्धारक है; उसे सारी पृथ्वी का परमेश्वर कहा जाएगा।"

— (यशायाह 54:5, Pavitra रूप)

"आओ, हम आनन्दित हों और मगन हों; और यश दें उसकी महिमा, क्योंकि मेम्ने की विवाह सभा आ गई है, और उसकी पत्नी ने स्वयं को तैयार कर लिया है।"

— (प्रकाशितवाक्य 19:7, Pavitra रूप)

दूल्हे का प्रेम उत्साही, वफादार, कभी नहीं छोड़ने वाला और स्थायी होता है। परमेश्वर केवल दूरस्थ उपासकों से संतुष्ट नहीं होते; वह निकटता और एकता की खोज करते हैं। एक दिन, मेम्ने का विवाह भोज मसीह और उसकी कलीसिया की शाश्वत एकता का जश्न मनाएगा।

पवित्र आत्मा: हमारा सहायक और सलाहकार

परमेश्वर केवल भविष्य की निकटता का वादा नहीं देते; वह हमें अभी पवित्र आत्मा देते हैं। यीशु ने उसे "दूसरा सहायक" कहा — जो सदा हमारे साथ रहेगा।

"और मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सदा तुम्हारे साथ रहे — सत्य की आत्मा, जिसे संसार स्वीकार नहीं कर सकता; क्योंकि वह उसे नहीं देखता और न जानता है; पर तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और तुम में रहेगा।"

— (यूहन्ना 14:16–17, Pavitra रूप)

"इसी प्रकार आत्मा भी हमारी दुर्बलताओं में मदद करता है; क्योंकि हम नहीं जानते कि हमें किस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए, पर आत्मा स्वयं अनुनय करता है उन आहों के द्वारा,

जिन्हें शब्दों में नहीं कहा जा सकता।"

— (रोमी 8:26, Pavitra रूप)

वह हमें सांत्वना देता है, शिक्षा देता है, शक्ति देता है, और हमारे लिए मध्यस्थता करता है। वह कोई निर्जीव शक्ति नहीं, बल्कि परमेश्वर की जीवित उपस्थिति है हमारे भीतर। पवित्र आत्मा के साथ चलना, परमेश्वर की दैनिक सलाह, ज्ञान और शक्ति में जीना है।

परमेश्वर का भय: सुंदर श्रद्धा

मित्रता, दत्तकत्व, और निकटता कभी श्रद्धा (भय) को अव्यापार नहीं कर देते। यदि हम केवल निकटता पर जोर दें, तो हम परमेश्वर को सामान्य बना सकते हैं। शास्त्र निरंतर कहता है कि परमेश्वर का भय पवित्र, शुद्ध और सुंदर है।

"परमेश्वर का भय निर्मल है और वह सदा स्थिर रहेगा; परमेश्वर के न्याय सत्य हैं, और समस्त धर्मी हैं।"

— (भजन 19:9, Pavitra रूप)

"देखो, परमेश्वर की दृष्टि उन पर है जो उससे डरते हैं, जो उसकी दया पर आशा रखते हैं।"

— (भजन 33:18, Pavitra रूप)

"परमेश्वर का भय बुद्धि का मूल है; और जो उसके उपदेशों को मानते हैं, वे सब अच्छे बोध रखते हैं; उसकी स्तुति सदा बनी रहती है।"

— (भजन 111:10, Pavitra रूप)

"परमेश्वर का भय जीवन का स्रोत है, जिससे व्यक्ति मृत्यु की जालों से बच जाता है।"

— (नीतिवचन 14:27, Pavitra रूप)

परमेश्वर का भय वह डर नहीं है जो हमें दूर भगाए, बल्कि वह विस्मय है जो हमें और निकट लाता है। यह आदर है जो बुद्धि, नम्रता और जीवन को जन्म देता है।

उन वादों की सूची जो परमेश्वर देते हैं उन लोगों को जो उसका भय रखते हैं (पवित्र बाइबिल शैली)

a) परमेश्वर का भय बुद्धि का प्रारंभ है। (भजन 111:10)

b) परमेश्वर का भय ज्ञान का आरंभ है। (नीतिवचन 1:7)

c) वह जिस व्यक्ति से डरता है, उसे मार्ग दिखाएगा। (भजन 25:12)

d) परमेश्वर का रहस्य उनके पास है जो उससे डरते हैं; वह उन्हें अपनी वाचा दिखाएगा। (भजन 25:14)

e) परमेश्वर का भय आयु बढ़ाता है। (नीतिवचन 10:27)

f) यह शरीर को स्वास्थ्य देगा और हड्डियों को पोषण देगा। (नीतिवचन 3:7–8)

g) धन्य है वह जो परमेश्वर से डरता है और उसके मार्गों पर चलता है। (भजन 128:1)

h) आप अपने हाथ की कमाई खाएँगे, सुखी रहोगे, और सब ठीक रहेगा। (भजन 128:2)

i) तुम्हारी पत्नी फलता हुआ दूसरा अंगूर वृक्ष हो, और तुम्हारे बच्चे मेज के चारों ओर जैतून के पौधे हों। (भजन 128:3)

j) इस प्रकार वह मनुष्य धन्य है जो परमेश्वर से डरता है। (भजन 128:4)

k) परमेश्वर की दयालुता उन लोगों पर युग-युग तक है जो उससे डरते हैं; उसकी न्यायसंगता बच्चों की संतति तक। (भजन 103:17)

l) जो परमेश्वर से डरते हैं, उनमें कोई वस्तु की कमी नहीं होती। (भजन 34:9)

m) जो परमेश्वर की खोज करते हैं, उन्हें किसी अच्छी वस्तु की कमी नहीं होगी। (भजन 34:10)

n) नम्रता और परमेश्वर का भय धन, आदर और जीवन लाते हैं। (नीतिवचन 22:4)

o) परमेश्वर का दूत उन पर शिविर लगाता है जो उससे डरते हैं और उन्हें डिफेंड करता है। (भजन 34:7)

p) परमेश्वर का भय सुरक्षित दुर्ग है; वह अपनी सन्तानों का शरण बनेगा। (नीतिवचन 14:26)

q) जैसे आकाश पृथ्वी से ऊँचा है, उसी तरह उसकी दया उन पर है जो उससे डरते हैं। (भजन 103:11)

r) परमेश्वर को प्रसन्नता है उन पर जो उससे डरते हैं, जो उसकी दया पर आशा रखते हैं। (भजन 147:11)

s) परमेश्वर का भय जीवन और संतोष की ओर ले जाता है; और व्यक्ति विश्राम पाए, और वह संकट से न छुए। (नीतिवचन 19:23)

t) परमेश्वर का भय जीवन का स्रोत है, जो मनुष्यों को मृत्यु की जालों से बचाता है। (नीतिवचन 14:27)

u) वह उन लोगों की चाह पूरी करेगा जो उससे डरते हैं; वह उनकी पुकार सुनेगा और उन्हें बचाएगा। (भजन 145:19)

v) देखो, परमेश्वर की दृष्टि उन पर है जो उससे डरते हैं, और जो उसकी दया पर आशा रखते हैं। (भजन 33:18)

w) आदर से पहले नम्रता है; परमेश्वर का भय बुद्धि की सीख है। (नीतिवचन 15:33)

दोनों दृष्टिकोणों को साथ रखना

तो आप परमेश्वर को कैसे देखते हैं? शास्त्र कहता है कि हमें उन्हें **दोनों रूपों में** देखना चाहिए — निकट जैसे सबसे प्रिय मित्र, कोमल जैसे सिद्ध पिता, विश्वासयोग्य दूल्हा, और सदा सहायक; और साथ ही पवित्र, महिमामय, और सर्वशक्तिमान राजा।

प्रेरित यूहन्ना हमें यह संतुलन दिखाते हैं — एक समय वे अंतिम भोज में यीशु की छाती पर सिर रखे होते हैं। किसी अन्य समय, वे उस दिव्य प्रभु के चरणों में मरा समान गिर जाते हैं। दोनों सत्य हैं। दोनों सही प्रतिक्रियाएँ हैं।

जब हम परमेश्वर के निकट जाते हैं, हमारी अंतरंगता गहरी होती है और हमारा आश्चर्य बढ़ता है। परमेश्वर का भय उसकी मित्रता को घटाता नहीं — वह उसे पूर्ण करता है।

निष्कर्ष: परमेश्वर को जैसा वह हैं, वैसे देखें

मित्र। पिता। दूल्हा। सहायक। राजा। उपभोग करनेवाली अग्नि। यदि हम केवल एक पक्ष देखें, तो हमारी दृष्टि अधूरी होगी। लेकिन जब हम परमेश्वर को उनकी **पूर्ण स्वरूप** में देखते हैं —

निकटता और महिमा, प्रेम और विश्वास, मित्रता और पवित्रता — तो हमारे हृदय सचमुच जीवित हो जाते हैं।

निकटता के साथ श्रद्धा। प्रेम के साथ आदर। पास होने के साथ महिमा। यही है कि हमें परमेश्वर को कैसे देखना चाहिए।